

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा: उद्धार से एक पृथक एवं सामर्थ्यकारी अनुभव (सैद्धांतिक स्थिति पत्र)

1. प्रस्तावना एवं मौलिक मसीही सिद्धांतों की रूपरेखा (Introduction & Foundations of Doctrine)

कलीसियाई नेतृत्व और मसीही सेवकाई के रणनीतिक दृष्टिकोण से, उद्धार (Salvation/Soteriological Work) और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा (Baptism of the Holy Spirit/Empowering Work) के मध्य के तात्विक एवं कालानुक्रमिक (chronological) अंतर को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भेद केवल एक सैद्धांतिक या अकादमिक बहस का विषय नहीं है, बल्कि यह प्रभावी, जीवंत और अलौकिक कलीसियाई सेवा का वास्तविक आधार है। जब कलीसियाई अगुए इस सिद्धांत की न्युमैटोलॉजिकल (Pneumatological) बारीकियों को समझते हैं, तब वे विश्वासी वर्ग को केवल धार्मिक अनुष्ठानों या बौद्धिक अवधारणाओं तक सीमित न रखकर उन्हें मसीही जीवन और सेकाई की वास्तविक सामर्थ्य में प्रवेश कराने में सक्षम होते हैं।

पारंपरिक रूप से कलीसियाओं में एक व्यापक भ्रम विद्यमान रहा है कि जब कोई व्यक्ति उद्धार प्राप्त करता है, तो उसे उसी क्षण पवित्र आत्मा का पूर्ण संचार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। इस धारणा के अनुसार, उद्धार के पश्चात पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के किसी पृथक या अतिरिक्त अनुभव की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। हालाँकि, न्यू टेस्टामेंट का निष्पक्ष और गहन न्युमैटोलॉजिकल अध्ययन इस पारंपरिक विचार का खंडन करता है। पवित्र शास्त्र यह स्पष्ट रूप से स्थापित करता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा "उद्धार पैकेज" का कोई स्वतः प्राप्त होने वाला अनैच्छिक अंग नहीं है, अपितु यह धर्म-परिवर्तन (उद्धार) के पश्चात प्राप्त होने वाला एक विशिष्ट, पृथक और सामर्थ्यकारी करिस्मैटिक अनुभव है।

"इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुएओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षा रूपी नींव फिर से न डालें।" — **इब्रानियों 6:1-2**

इब्रानियों 6:1-2 में उल्लिखित मसीह की धर्म-शास्त्र सम्बंधी प्राथमिक शिक्षाओं का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि मसीही विश्वास की नींव में जिन मूलभूत सिद्धांतों को शामिल किया गया है, उनमें "बपतिस्मों" (बहुवचन) और "हाथ रखने" की शिक्षा सम्मिलित है। यहाँ एकवचन 'बपतिस्मा' का नहीं, बल्कि बहुवचन 'बपतिस्मों' शब्द का प्रयोग किया गया है, जो इस बात का स्पष्ट सैद्धांतिक प्रमाण है कि मसीही जीवन-यात्रा में एक से अधिक बपतिस्मा उपलब्ध और आवश्यक हैं—जल का बपतिस्मा एवं आत्मा का बपतिस्मा।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इब्रानियों 6:2 में "बपतिस्मों" के ठीक साथ "हाथ रखने" (laying on of hands) के सिद्धांत को मसीही नींव का मौलिक अंग माना गया है। यह प्रेरितिक कार्यप्रणाली (apostolic methodology) का सीधा संबंध प्रेरितों के काम 8:17 और 19:6 से जोड़ता है, जहाँ प्रेरितों द्वारा हाथ रखे जाने के माध्यम से ही विश्वासियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ था। मरे हुए कामों से मन फिराना और परमेश्वर पर विश्वास करना जहाँ उद्धार (soteriology) के प्राथमिक चरण हैं, वहीं बपतिस्मों और हाथ

रखने की शिक्षा इस बात की पुष्टि करती है कि जल के बपतिस्मा के अतिरिक्त पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और हस्तारोपण द्वारा उसका संचार कलीसिया का मौलिक सैद्धांतिक आधार है।

यह सैद्धांतिक नींव सुसमाचार की उस ऐतिहासिक घोषणा की ओर सुचारु रूप से ध्यान केंद्रित करती है, जिसकी भविष्यवाणी यूहन्ना बपतिस्मा दाता ने की थी और जिसे प्रभु यीशु मसीह ने अपनी सेकाई में प्रतिज्ञा के रूप में पूर्ण किया।

2. पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की प्रतिज्ञा और सामर्थ्य का उद्देश्य (The Promise and Purpose of Spirit Baptism)

प्रभु यीशु मसीह द्वारा अपनी पृथ्वी पर की सेकाई की शुरुआत में और तत्पश्चात अपने स्वर्गारोहण से ठीक पूर्व दिए गए निर्देशों का कलीसियाई सेकाई के लिए अत्यधिक रणनीतिक और न्युमैटोलॉजिकल महत्व है। यीशु ने अपनी सेकाई के आरंभ से ही यह स्थापित कर दिया था कि सुसमाचार का संदेश केवल पापोद्धार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विश्वासी को अलौकिक आत्मिक सामर्थ्य से सुसज्जित करने का अनुभव अनिवार्य रूप से निहित है।

न्युमैटोलॉजिकल दृष्टि से, पवित्र आत्मा के दो विशिष्ट कार्य रूप स्पष्ट होते हैं: पहला, *सोटिरियोलॉजिकल कार्य* (Soteriological Work), जिसके द्वारा आत्मा पापी को मन फिराव और पुनर्जन्म प्रदान करके मसीह की देह में शामिल करता है; और दूसरा, *इम्पावरिंग/करिस्मैटिक कार्य* (Empowering/Charismatic Work), जो उद्धार के पश्चात विश्वासी को अलौकिक सेकाई, गवाही और सामर्थ्य के लिए पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देता है।

यूहन्ना बपतिस्मा दाता ने यीशु के आगमन की घोषणा करते हुए बपतिस्मा के इसी तात्त्विक अंतर को रेखांकित किया था:

"मैंने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।" — **मरकुस 1:8**

यह वचन प्रमाणित करता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कोई गौण विचार नहीं, बल्कि सुसमाचार संदेश का एक प्राथमिक, अनिवार्य और अभिन्न अंग है। जल का बपतिस्मा जहाँ मन फिराव का प्रतीक है, वहीं यीशु द्वारा दिया जाने वाला पवित्र आत्मा का बपतिस्मा विश्वासी को अलौकिक सेकाई हेतु आत्मिक सामर्थ्य प्रदान करता है।

अपनी पृथ्वी पर की सेवा पूर्ण करने के पश्चात, स्वर्ग में अपने पिता के पास जाने से ठीक पहले, यीशु ने अपने चेलों को यरूशलेम में ठहरने का एक स्पष्ट आदेश दिया:

"और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" — **लूका 24:49**

"क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" — **प्रेरितों के काम 1:5**

यीशु का यह आदेश दर्शाता है कि बिना अलौकिक सामर्थ्य के सेकाई आरंभ करना व्यर्थ और निष्फल है। पेंटेकोस्ट के दिन पवित्र आत्मा के उतरने के माध्यम से चेलों को वह अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त हुई जिसकी उन्हें अपनी वैश्विक सेकाई के लिए परम आवश्यकता थी। इस बपतिस्मा और सामर्थ्य प्राप्ति का मुख्य न्युमैटोलॉजिकल उद्देश्य प्रेरितों के काम 1:8 में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है:

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" — **प्रेरितों के काम 1:8**

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का मुख्य उद्देश्य केवल व्यक्तिगत भावनात्मक अनुभव देना नहीं, बल्कि विश्वासियों को यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी की अंतिम सीमा तक मसीह के जीवित और अलौकिक गवाह बनाना है।

मानवीय ज्ञान बनाम अलौकिक सामर्थ्य का तुलनात्मक प्रभाव

जो लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को प्राप्त किए बिना केवल मानवीय योग्यताओं के आधार पर सेकाई करने का प्रयास करते हैं, उनकी सीमाएं और परिणाम उन लोगों से पूरी तरह भिन्न होते हैं जो पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर सेवा करते हैं:

श्रेणी (Category)	केवल जल/उद्धार बपतिस्मा प्राप्त सेवा	पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से युक्त सेवा
सेकाई का आधार	मानवीय बौद्धिकता एवं तार्किक फुसलाहट (Human Persuasion & Intellectualism)	पवित्र आत्मा का अलौकिक सामर्थ्य प्रकटीकरण (Supernatural Power & Demonstration)
परिणाम/गवाही	केवल वैचारिक/मानसिक परिवर्तन का प्रयास	जीवित गवाह और मसीह के सत्य की प्रत्यक्ष, अलौकिक गवाही

जो विश्वासी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं करते, वे केवल मानवीय तर्कशास्त्र और फुसलाने वाले शब्दों का सहारा लेकर लोगों को प्रभावित करने का प्रयास कर सकते हैं। इसके विपरीत, जो लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के माध्यम से सामर्थ्य से भर जाते हैं, वे मसीह के जीवित गवाह बन जाते हैं; उनका संपूर्ण जीवन और सेकाई स्वयं यीशु मसीह के सत्य की अलौकिक गवाही देती है।

यीशु द्वारा दी गई यह प्रतिज्ञा केवल एक सैद्धांतिक विचार नहीं थी, बल्कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसका ऐतिहासिक और व्यावहारिक क्रियान्वयन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

3. प्रेरितों के काम से व्यावहारिक एवं ऐतिहासिक बाइबलीय प्रमाण (Biblical Case Studies in the Book of Acts)

शुरुआती कलीसिया (Apostolic Church) के ऐतिहासिक मामले और घटनाक्रम इस सिद्धांत की निर्विवाद पुष्टि करते हैं कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा धर्म-परिवर्तन या उद्धार के पश्चात होने वाली एक पृथक और विशिष्ट घटना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज मामले स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उद्धार पाना (सोटिरियोलॉजिकल अनुभव) और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना (सामर्थ्यकारी अनुभव) दो स्पष्ट और अलग-अलग चरण हैं।

केस स्टडी 1: सामरिया के विश्वासी (प्रेरितों के काम 8:12, 8:14-17)

सामरिया में जब फिलिप्पुस ने परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का सुसमाचार सुनाया, तो लोगों ने उस पर विश्वास किया और जल का बपतिस्मा लिया:

"परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे।" — प्रेरितों के काम 8:12

यहाँ सामरिया के लोगों ने उद्धार का संदेश स्वीकार कर लिया था और वे सच्चे मसीही विश्वासी बन चुके थे। परन्तु, जब यरूशलेम के प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को विशेष रूप से उनके पास भेजा:

"जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।" — प्रेरितों के काम 8:14-17

यह मामला अकाट्य रूप से सिद्ध करता है कि विश्वास करने और जल का बपतिस्मा लेने के बावजूद *"वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।"* यह वाक्य स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि जल का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कालानुक्रमिक (chronologically) और न्युमैटोलॉजिकल रूप से दो पृथक घटनाक्रम हैं। यरूशलेम से आए प्रेरितों द्वारा हाथ रखकर प्रार्थना करने पर ही उन्होंने पवित्र आत्मा पाया, जो उनके धर्म-परिवर्तन के बाद का एक विशिष्ट अनुभव था।

केस स्टडी 2: इफिसुस के चेले (प्रेरितों के काम 19:1-7)

इसी प्रकार का एक अन्य ऐतिहासिक और सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण उदाहरण इफिसुस में देखने को मिलता है। जब पौलुस इफिसुस पहुँचा, तो उसने वहाँ कुछ चेलों को देखा और उनसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा:

"जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे प्रदेश से होकर इफिसुस में आया। वहाँ कुछ चेलों को देखकर उनसे कहा, “क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?” उन्होंने उससे कहा, “हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।” उसने उनसे कहा, “तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा, “यूहन्ना का बपतिस्मा।” पौलुस ने कहा, “यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।” यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरुष थे।” — प्रेरितों के काम 19:1-7

पौलुस का यह प्रश्न—“क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?”—इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि विश्वास करना (उद्धार) और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना दो अलग अनुभव हैं। पौलुस ने पद 4 में स्पष्ट किया कि यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का बपतिस्मा था जो यीशु पर विश्वास करने की ओर संकेत करता था। जब उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया और पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तब पवित्र आत्मा उन पर उतरा। इसके परिणामस्वरूप तुरंत बाह्य अलौकिक प्रकटीकरण (भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलना और भविष्यवाणी करना) देखने को मिले।

बाइबलीय उदाहरणों की तुलनात्मक तालिका

बाइबलीय घटना	प्रारंभिक स्थिति (उद्धार/जल बपतिस्मा)	पृथक अनुभव (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा)	प्रकटीकरण/परिणाम
सामरिया (प्रेरितों 8)	फिलिप्पुस के संदेश पर विश्वास व जल बपतिस्मा लिया	पतरस व यूहन्ना द्वारा हाथ रखे जाने पर आत्मा पाया	उद्धार के बाद पृथक एवं प्रत्यक्ष अनुभव
इफिसुस (प्रेरितों 19)	यूहन्ना के मन फिराव का बपतिस्मा / यीशु पर विश्वास	प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा व पौलुस द्वारा हाथ रखना	भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलना व भविष्यवाणी करना

ये प्रेरितिक प्रमाण आधुनिक कलीसियाई नेतृत्व के लिए एक गंभीर सैद्धांतिक चुनौती और व्यावहारिक पुनरीक्षण का आह्वान करते हैं।

4. कलीसियाई नेतृत्व के लिए व्यावहारिक निष्कर्ष एवं आह्वान (Implications and Pastoral Call to Action)

शास्त्र के संपूर्ण न्युमैटोलॉजिकल अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि जो कलीसियाएं, अगुए या सेवक पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के इस पृथक अनुभव को नकारते हैं, वे अपनी सेकाई को अत्यधिक आत्मिक क्षति पहुँचाते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का इनकार करने से कलीसियाई सेकाई केवल बौद्धिक, रूपवादी और शक्तिहीन (Powerless) बनकर रह जाती है। जब परमेश्वर ने अपने चेलों को मसीही गवाही और सेवा के लिए

सामर्थ्य प्रदान करने हेतु पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को ही मुख्य साधन बनाया है, तो इसके बिना की गई कोई भी सेवा केवल मानवीय ज्ञान और तार्किक फुसलाहट तक सीमित रह जाएगी।

कलीसियाई अगुओं और चरवाहों की यह गंभीर आत्मिक जिम्मेदारी है कि वे अपनी कलीसियाओं को "रूपमात्र की भक्ति" से बाहर निकालकर "पूर्ण सुसमाचार" (Full Gospel) की अलौकिक सामर्थ्य में ले जाएं। इसके लिए कलीसियाई नीति और नेतृत्व हेतु निम्नलिखित आधिकारिक दिशानिर्देशों का क्रियान्वयन आवश्यक है:

1. **सिद्धान्त की स्पष्ट एवं निर्भीक पुनरुद्घोषणा:** कलीसियाई नेतृत्व को अपने मसीही समुदायों में यह स्पष्ट रूप से सिखाना चाहिए कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उद्धार (परिवर्तन) के बाद प्राप्त होने वाला एक अत्यंत आवश्यक, पृथक और सामर्थ्यकारी अनुभव है। केवल बौद्धिक सहमति को ही आत्मिक परिपूर्णता न माना जाए।
2. **प्रेरितिक प्रतिमान के अनुसार हस्तारोपण (Laying on of Hands):** कलीसिया के अगुओं को उन सभी विश्वासी भाई-बहनों की पहचान करनी चाहिए जिन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास तो किया है और जल का बपतिस्मा लिया है, परंतु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है। अगुओं का दायित्व है कि वे प्रेरितिक नमूनों (Acts 8:17, 19:6) का पालन करते हुए विश्वासी भाई-बहनों को ऐसी कलीसियाओं से जोड़ें जहाँ पवित्र आत्मा के बपतिस्मा पर विश्वास किया जाता है, तथा कलीसिया के आत्मिक अगुएँ उन पर हाथ रखकर प्रार्थना करें ताकि वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर सकें।
3. **अलौकिक सामर्थ्य व गवाही में चलने हेतु आह्वान:** विश्वासी वर्ग को केवल नाममात्र का या केवल बौद्धिक मसीही जीवन जीने के बजाय, एक सच्चे मसीही चेले का जीवन जीने और समाज में यीशु मसीह के सुसमाचार के सत्य का जीवित गवाह बनने के लिए इस अलौकिक सामर्थ्य को प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित और निर्देशित किया जाना चाहिए।

अंतिम निष्कर्ष

कलीसिया तब तक अपनी पूर्ण अलौकिक क्षमता और कलीसियाई प्रभावशीलता को प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि वह 'पूर्ण सुसमाचार' (Full Gospel) को उसके संपूर्ण सामर्थ्य के साथ अंगीकार न करे। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कोई ऐच्छिक या द्वितीय श्रेणी का अनुभव नहीं, बल्कि मसीही जीवन और प्रभावकारी सेकाई की अनिवार्य आवश्यकता है। समय की मांग है कि कलीसियाई नेतृत्व इस सैद्धांतिक सत्य को अंगीकार करे, केवल बौद्धिक एवं शक्तिहीन सेकाई की सीमाओं को तोड़े, और संपूर्ण विश्वासी वर्ग को पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और उसकी अलौकिक सामर्थ्य में चलने के लिए तैयार करे।